

संपादकीय
संवाद की आस

निसंदेह भारत-पाक के इस्ते अब तक के सबसे खराब दौर से गुजर रहे हैं। पुलवामा हमले के बाद एयर स्ट्राइक तक बिंगड़े इस्ते तब बेहद कड़वाहट भरे हो गये जब भारत ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को विष्प्रभावी बनाया। इस मुद्दे पर पाक की बौखलाहट अभी भी जारी है। ऐसे माहौल में जिम्मेदार भ्रिका समझते हुए भारत ने इस साल के अंत में भारत में होने वाली शंघाई सहयोग संगठन यानी एससीओ की बैठक में पाक प्रधानमंत्री को आमंत्रण भेजने की बात स्थीरीय है। हालांकि, यह द्विपक्षीय वार्ता नहीं है, इसमें संगठन के आठ देश व चार पर्यावरक देश भी शामिल होंगे। दरअसल, भारत व पाकिस्तान चीन के बदबो वाले एससीओ में 2017 में पूर्णकालिक सदस्य बने थे। साल में इस संगठन के राष्ट्र प्रमुखों की बैठक होती है। एससीओ की स्थापना वर्ष 2001 में हुई थी और चीन, रूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान इसके सदस्य देश रहे हैं। संगठन का मकसद आतंकवाद रोकना तथा आर्थिक व सांस्कृतिक सहयोग बढ़ाना रहा है। भारत की अध्यक्षता में पहली बार होने वाली इस बैठक के लिये इमरान खान को आमंत्रण भेजा जायेगा। ऐसे में उम्मीद जगी है कि लंबे समय से तनावपूर्ण शिखों पर जमी बर्फ पिघल सकती है? खासकर जम्मू-कश्मीर के विशेषिकारों को वापस लेने और दो नये केंद्रशक्तिप्रदेश बनाये जाने के बाद पाकिस्तान के वैशिक प्रलाप के बाद दोनों देशों के संबंधों में आयी दरार को पाटने में मदद मिलने की उम्मीद जगी है। हालांकि जून 2019 में बिश्केक में हुए राष्ट्राध्यक्षों के शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने भाग लिया था। तब भी दोनों देशों की जारी तनावी के बीच बातचीत को लेकर क्यास लगाये जा रहे थे मगर तब द्विपक्षीय बातचीत नहीं हो पायी थी।

बहराहाल, यह निर्विवाद सत्य है कि भारत व पाक दो पड़ोसी देश हैं और पड़ोसी बदले नहीं जा सकते। दोनों परमाणु शक्ति संग्रह राह रहे हैं। ऐसे में बातचीत किये दिन आगे नहीं कहा बढ़ा जा सकता। यह भी हीकोकत है कि पाक प्रयोजित आतंकवादियों द्वारा मुंबई हमले से लेकर 2016 में हुए उड़ी हमले तक दोनों देशों के रिश्तों में बेहद तल्खी आई। मगर फरवरी 2019 में हुए पुलवामा हमले वे तो राजनीतिक परिदृश्य ही बदल दिया। फिर बालाकोट एयर स्ट्राइक के बाद शिखियों और जटिल हुई। उसके बाद अगस्त 2019 में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाये जाने के बाद तो पाक की रिवालफ चरम पर पहुंच गई। उसकी ताम मंत्रालय कोशिशों को भारत ने नाकाम ही किया है। सीमा पर आये दिन होने वाली गोलाबारी और भारतीय इलाके में हमले समस्या को लगातार जटिल बना रहे हैं। इसके बावजूद कहीं से तो नई शुरुआत करनी ही होगी। संवादहीनता दोनों देशों के हित में नहीं कही जा सकती। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहली पारी के शापथग्रहण समारोह में तत्कालीन पाक प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने शिरकत की थी। उसके बाद इमरान खान भारत आने वाले दूसरे प्रधानमंत्री होंगे।



विजन दोस्त थे, सैफ फिल्म के निर्माता भी थे। गो गोवा गोवा के कुछ समय बाद सैफ और दिनेश की दोस्ती में दरर आ गई और दोनों अलग हो गए। अब जब इस फिल्म का पार्ट 2 बनाए जाने की बात हो रही है तब क्योंकि डिप्रेशन की स्थिति में ग्रसित व्यक्ति हर समय आत्मविश्वास की

फिल्म में काम करेगे। फिल्म में जड़े सूत्र बताते हैं, गो गोवा गोवा 2 की कहानी और क्रिकेट का काम किये तो हो सकता है कि आप कुछ ऐसी समस्या से गुजर रही हैं जिसकी ओर आपका ध्यान देना जरूरी है क्योंकि ये एक तरह का सिंड्रोम है जिसे बन आउट करता जाता है। जो हां जब आप लंबे समय तक स्टेस वा तनाव की स्थिति में रहते हैं या ऐसी स्थिति से बाहर नहीं आ पाते हैं तो आप बन आउट के शिकायत हैं। आपत्ति पर युग्मी सैफ फिल्म का काम करते हैं, अब निश्चित तौर पर एक शोध में ये बात सामने आई है की बन आउट की स्थिति में ज्यादातर वे लोग पाए जाते हैं जो घर पर या ऑफिस में लंबे समय से तनाव में कार्य करते होते हैं बहुत अधिक थकान, शरीर में सूजन और सायकॉलिजिकल तनाव का बढ़ना एक दूसरे वेहतर और ज्यादा मजेदार होता है।

कुछाल खेमू आनंद तिवारी और सैफ अली खान अभिनीत